An Analytical Study for Need of Library in Schools

(विद्यालयों में पुस्तकालय की आवष्यकता हेतु एक विष्लेष्णात्मक अध्ययन)

* **Sangeeta More**
Ph.D. Scholar
SSSUTMS,Sehore

* * **Dr Arun Modak**
Professor,
SSSUTMS, Sehore

1. प्रस्तावना

किसी भी राष्ट्र की उन्नति तभी संभव है, जब उसके निवासी जागरूक एवं पढे लिखे होंगे। जागरूक समाज की राष्ट्र की प्रगति का द्योतक है, इसलिये यह आवष्यक है राष्ट्र अपने निवासियों को षिक्षित करायें। षिक्षित कराने की जिम्मेदारी देष प्रदेष की सरकार की होती है। इसके लिये सरकार अर्थात षासन के द्वारा कई योजनायें बनायी जाती है। इन योजनाओं का उपयोग करते हुये छात्र एवं छात्रायें अध्ययन करते करते हैं, परन्तु उनका अध्ययन तब तक पूर्ण नहीं माना जा सकता जब तक कि वे अपने अध्ययनरत षैक्षणिक संस्थान में पुस्तकालयों का उपयोग नहीं करते है। पुस्तकालय एक सामाजिक संस्था मानी गयी है। वास्तविकता यह है पुस्तकालय समाज के सहयोग से सममाज के लिये संचालित होती है। समाज का यह सहयोग पुस्तकालय के माध्यम से अपने और राष्ट्र के विकास के लिये होता है। षिक्षित व्यक्ति या समाज अपने चारों ओर होने वाली प्रत्येक घटना को ध्यान पूर्वक देखता है, उस पर चिन्तन एवं मनन करता है फिर उस पर अपने स्वंय का विचार रखता है और विष्व में होने वाली प्रत्येक विकास की प्रकिया पर ध्यान रखता है। उसके चिन्तन एवं मनन करने पर एवं स्वंय के एक विचार बनाने में बहुत सी मिलती जुलती घटनाओं या विचारों को पढना एवं समझना पडता है यहीं पर उसे एक ऐसी संस्था की आवष्यकता महसूस होती है जो ऐसे साहित्य अथवा विचार

उपलब्ध कराये जो कि उसके विचारों को एक निष्चित दिषा देने में सक्षम हो सके, ऐसी संस्था पुस्तकालय ही हो सकती है। पुस्तकालय वह स्थान है, जहां विविध प्रकार के ज्ञान, सूचनाओं, स्त्रोतो, सेवाओं आदि का संग्रह रहता है। पुस्तकालय षब्द अंग्रेजी के लाइब्रेरी षब्द का हिन्दी रूपांतर है। लाइब्रेरी षब्द की उत्पत्ति लेटिन् षब्द लाइवर से हुई है, जिसका अर्थ है – पुस्तक। पुस्तकालय का अर्थ है – पुस्तक + आलय अर्थात पुस्तकों का घर, इस प्रकार पुस्तकालय उस स्थान को कहते है जहां पर अध्ययन सामग्री, पुस्तके, पत्र–पत्रिकायें, मानचित्र, हस्तलिखित ग्रंथ, ग्रामोफोन रिकार्ड, एवं अन्य पठनीय सामग्री उपयोग हेतु संग्रहित रहती है। पुस्तकालय मौन अध्ययन का स्थान है, जहां हम बैठकर ज्ञानार्जन करते है। जहां विभिन्न प्रकार की पुस्तकें होती है और जिनका अध्ययन स्वतंत्र रूप से किया जाता है, उसे पुस्तकालय कहा जाता है। महान देषभक्त एवं विद्वान लाला लाजपत राय ने पुस्तकों के महत्व के संदर्भ में कहा था –

मैं पुस्तकों का नर्क में भी स्वागत करूंगा। इनमें वह षक्ति है जो नर्क को भी स्वर्ग बनाने की क्षमता रखती है। वास्तव में मनुष्य के लिये ज्ञान अर्जन एवं बुद्धि के विकास के लिये पुस्तकों का अध्ययन अत्यन्त आवष्यक है। ष

2. षोध उद्देष्य

''उद्देश्यों के ज्ञान के अभाव में शिक्षक उस नाविक के समान है जो यह नहीं जानता कि उसे कहाँ जाना है? और शिक्षार्थी उस पतवार विहीन नौका के समान है जो लहरों के थपेड़े खाकर कहीं किनारे पर जा लगेगी।'' प्रस्तुत शोध निम्न उद्देष्य के आधार पर पूर्ण किया गया है–

1. मध्य प्रदेष राज्य के बैतूल तहसील में संचालित षासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में छात्रों द्वारा पुस्तकालय के उपयोग का अध्ययन करना।

3. षोध परिकल्पना

परिकल्पना का षाब्दिक अर्थ है – पूर्व चिन्तन। यह अनुसंधान की प्रक्रिया का दूसरा महत्वपूर्ा स्तम्भ है। इसका तात्पर्य यह है कि किसी समस्या के विष्लेषण और परिभाषीकरण के पष्चात उसमें कारणों तथा कार्य कारण के सम्बन्ध में पूर्व चिन्तन कर लिया गया है। अर्थात इस समस्या का यह कारण हो सकता है। परिकल्पना का शाब्दिक अर्थ है– 'समस्या का संभावित समाधान'। यह अनुसंधान प्रक्रिया का महत्वपूर्ण पद है। परिकल्पना मूलतः एक प्रकार की अनुमानपरक मानसिक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से शोध समस्या का अस्थायी एवं सत्याभाषी समाधान प्रस्तुत किया जाता है। परिकल्पना के द्वारा दो या दो से अधिक चरों के मध्य सम्बन्ध निरूपित किया जाता है। प्रस्तुत षोध हेतु निम्न षून्य परिकल्पनाओं को समेषित किया गया है –

1. मध्य प्रदेष राज्य के बैतूल तहसील में संचालित षासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में छात्रों द्वारा पुस्तकालय के उपयोग में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

५. षोध सारणीयन एवं गणना

सारणी संख्या – 1

मध्य प्रदेष राज्य के बैतूल तहसील में संचालित षासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में छात्रों द्वारा पुस्तकालय के उपयोग का सांख्यिकीय विष्लेषण

क्रं.	विवरण	छ	ड	ैण्क्ण्	ैम्ड	✓दृ तंजपव टंसनम	च ढ .05 पर सार्थकता
1.	षासकीय एक्सीलेंस हायर सेकेण्डरी स्कूल कोठी बाजार	90	11. 1222	2.1138	0.2228		
2.	षासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय टिकारी	90	11. 1556	2.0875	0.22		

3.	सुभाष हायर सेकेण्डरी स्कूल कोठी बाजार	90	11. 2222	2.0322	0.2142	11ण0076	सार्थक
4.	षासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय गंज	90	11. 2667	2.0598	0.2171		
5.	षासकीय महारानी लक्ष्मी बाई उच्चतर माध्यमिक विद्यालय	90	12. 7778	1.871	0.1972		

सारणी संख्या – 1 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि मध्य प्रदेष राज्य के बैतूल तहसील में संचालित षासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में छात्रों द्वारा पुस्तकालय के उपयोग के अन्तर्गत षासकीय एक्सीलेंस हायर सेकेण्डरी स्कूल कोठी बाजार के प्राप्तांकों का मध्यमान 11.1222, मानक विचलन 2.1138 तथा माध्य मानक त्रुटि 0.2228 है, जबकि षासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय टिकारी के प्राप्तांकों का मध्यमान 11.1556, मानक विचलन 2.0875 तथा माध्य मानक त्रुटि 0.22 है, सुभाष हायर सेकेण्डरी स्कूल कोठी बाजार के प्राप्तांकों का मध्यमान 11.2222, मानक विचलन 2.0322 तथा माध्य मानक त्रुटि 0.2142 है, षासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय गंज के प्राप्तांकों का मध्यमान 11.2667, मानक विचलन 2. 0598 तथा माध्य मानक त्रुटि 0.2171 है तथा षासकीय महारानी लक्ष्मी बाई उच्चतर माध्यमिक विद्यालय कोठी बाजार के प्राप्तांकों का मध्यमान 12.7778, मानक विचलन 1.871 तथा माध्य मानक त्रुटि 0.1871 है। इनका अनुपात मूल्य 11ण00764 जो कि च ढ .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है।

दण्ड आरेख संख्या – 1

मध्य प्रदेष राज्य के बैतूल तहसील में संचालित षासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में छात्रों द्वारा पुस्तकालय के उपयोग के सांख्यिकीय विष्लेषण का दण्ड आरेख

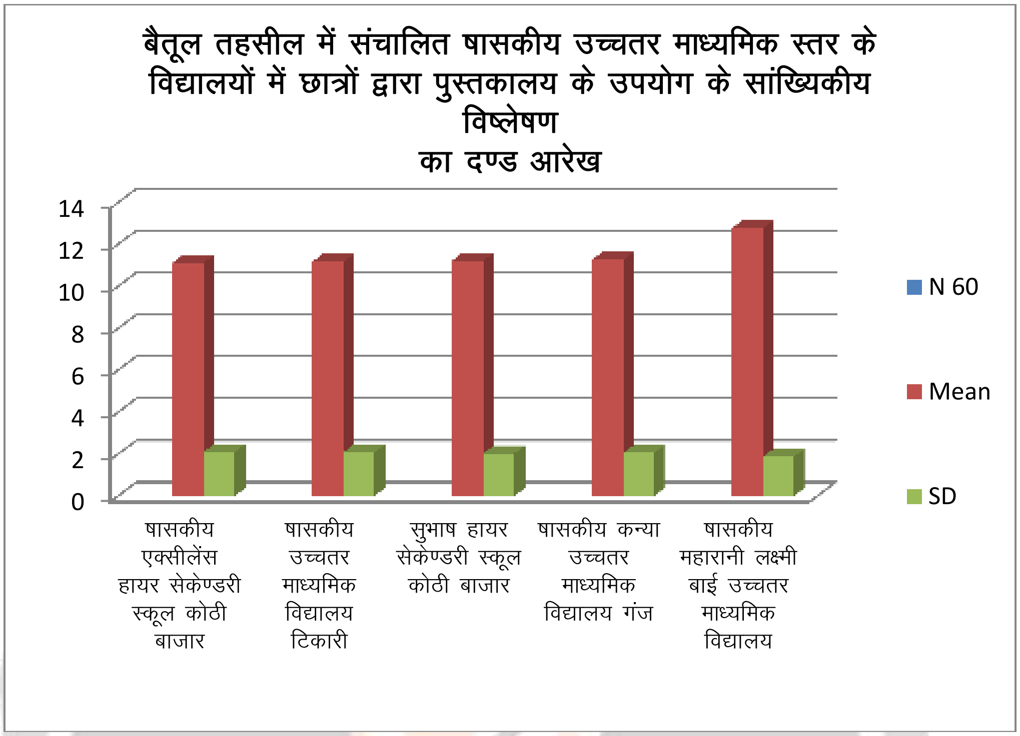

५. षोध परिणाम

उक्त सारणी के विष्लेषण से प्राप्त होता है कि मध्य प्रदेष राज्य के बैतूल तहसील में संचालित षासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में षासकीय महारानी लक्ष्मी बाई उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा पुस्तकालय का उपयोग सर्वाधिक किया जाता है तथा षासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय टिकारी के छात्रों द्वारा पुस्तकालय का उपयोग सबसे कम किया जाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *एण्डरसन, आर0एल0 एवं बेनराफ्ट, टी0ए0, "स्टेटिस्टिकल थियरी ऑफ रिसच", न्यूयार्क, मैक ग्रा हिल बुक कम्पनी, 1962*
2. *अग्निहोत्री, रविन्द्र , "भारतीय शिक्षा की वर्तमान समस्याएँ," दिल्ली: रिसर्च पब्लिकेशन्स इन सोशल साइन्सेस, 1956*

3. *भारत सरकार नई दिल्ली, "प्रोग्राम ऑफ एक्सन नेशनल पॉलिसी आन एजूकेशन", नई दिल्ली, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, 1986,*
4. *मुखर्जी, एम. एन, "एजूकेशन इन इण्डिया" टूडे एण्ड टुमारो, बड़ौदाः आचार्य बुक डिपो, 1992,*
5. *गुडे, पी. के., "डब्ल्यू0 जे0 एण्ड हैट", मेथड्स ऑफ रिसर्च, न्यूयार्क, मैकग्राहिल, 1962.*
6. *ओड, एल. के., "शिक्षा के नूतन आयाम", राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर, 1998.*
7. *शुक्ला. आर. पी, "जी.एस.डी. – शिक्षा के सिद्धांत", अग्रवाल पब्लिकेशन्स, दयाल बाग, आगरा 19 वाँ संस्करण, 2016.*
8. *उपाध्याय, प्रतिभा, "भारतीय शिक्षा में उदीयमान प्रवृत्तिया", शारदा पुस्तक भवन, यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद, 2000.*
9. *वर्मा, जी. एस, "भारत में शैक्षिक प्रणाली का विकास", इण्टरनेशनल पब्लिसिंग हाउस, मेरठ, 2005.*

——— 00 ———